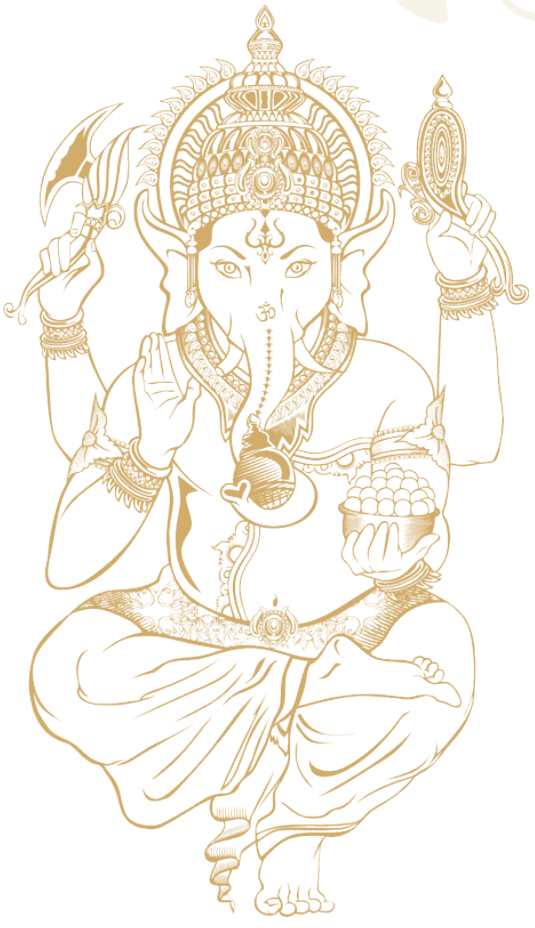

Mr.Aashish Yadav

Ms.Saroj Yadav

Model: Web-FreeMatching

Order No: 119791603

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
24-25/08/1994	जन्म तिथि	30-31/05/1995
बुध-गुरुवार	दिन	मंगल-बुधवार
घंटे 03:15:00	जन्म समय	01:50:00 घंटे
घटी 53:20:18	जन्म समय(घटी)	51:03:58 घटी
India	देश	India
Delhi	स्थान	Delhi
28:39:00 उत्तर	अक्षांश	28:39:00 उत्तर
77:13:00 पूर्व	रेखांश	77:13:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:21:08	स्थानिक संस्कार	-00:21:08 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
05:54:52	सूर्योदय	05:24:24
18:51:44	सूर्यास्त	19:13:01
23:47:10	चित्रपक्षीय अयनांश	23:47:43

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह		राशि	अंश	विंशोत्तरी	
बुध 12वर्ष 9मा 22दि		02:37:32	कर्क	लग्न		मीन	06:20:05	मंगल 3वर्ष 0मा 0दि	
शुक्र		07:42:02	सिंह	सूर्य		वृष	15:09:40	गुरु	
16/06/2014		19:57:09	मीन	चंद्र		मिथु	00:56:57	30/05/2016	
16/06/2034		11:28:21	मिथु	मंगल		सिंह	08:35:10	30/05/2032	
शुक्र	16/10/2017	19:00:30	सिंह	बुध	व	वृष	23:05:27	गुरु	19/07/2018
सूर्य	16/10/2018	14:59:04	तुला	गुरु	व	वृश्चि	16:55:39	शनि	29/01/2021
चन्द्र	16/06/2020	23:42:39	कन्या	शुक्र		मेष	23:02:18	बुध	07/05/2023
मंगल	16/08/2021	15:48:55	कुंभ व	शनि		कुंभ	29:52:01	केतु	12/04/2024
राहु	16/08/2024	23:59:12	तुला व	राहु	व	तुला	11:27:21	शुक्र	12/12/2026
गुरु	17/04/2027	23:59:12	मेष व	केतु	व	मेष	11:27:21	सूर्य	30/09/2027
शनि	16/06/2030	29:10:33	धनु व	हर्ष	व	मक	06:25:03	चन्द्र	29/01/2029
बुध	16/04/2033	27:10:32	धनु व	नेप	व	मक	01:28:28	मंगल	05/01/2030
केतु	16/06/2034	01:35:43	वृश्चि	प्लूटो	व	वृश्चि	05:09:15	राहु	30/05/2032

लग्न-चलित

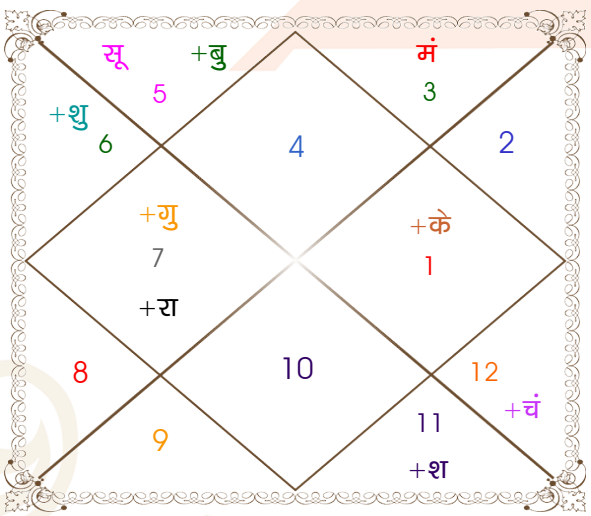

लग्न-चलित

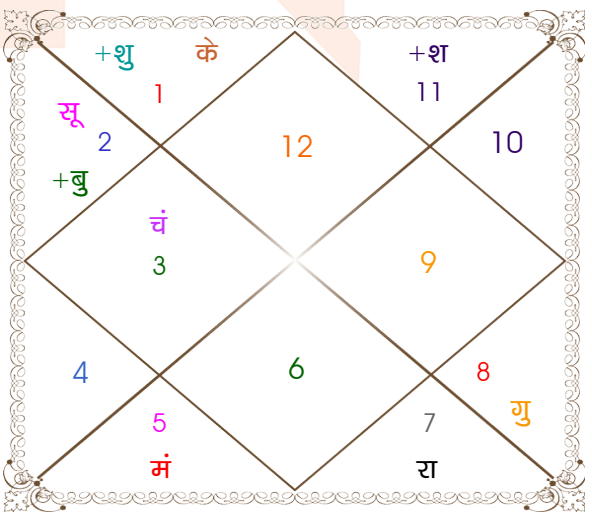

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	विप्र	शूद्र	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	जलचर	मानव	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	प्रत्यारि	साधक	3	1.50	--	भाग्य
योनि	गज	सर्प	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	गुरु	बुध	5	0.50	--	आपसी सम्बन्ध
गण	देव	देव	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	मीन	मिथुन	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	अन्त्य	मध्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	27.00		

डतण्ीपी ल्कंअ का वर्ग सर्प है तथा डेंैतवर ल्कंअ का वर्ग मार्जार है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार डतण्ीपी ल्कंअ और डेंैतवर ल्कंअ का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

डतण्ीपी ल्कंअ मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में द्वादश भाव में स्थित है।

व्यये च कुजदोषः कन्यामिथुनयोरविना।
द्वादशे भौमदोषस्तु वृषतौलिकयोरविना।।

अर्थात् व्यय भाव में यदि मंगल बुध तथा शुक्र की राशियों में स्थित हो तो भौम दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल डतण्ीपी ल्कंअ कि कुण्डली में द्वादश भाव में मिथुन राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

डेंैतवर ल्कंअ मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में षष्ठ भाव में स्थित है।

गुणबाहुल्ये भौमदोषो न विद्यते।।

यदि अधिक गुण मिलते हों तो मंगल दोष नहीं लगता।

क्योंकि अधिक गुण मिलते हैं अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

यामित्रे च यदा सौरि लग्ने वा हिबुकेऽथवा।
अष्टमे द्वादशे वापि भौमदोषविनाशकृत्।।

शनि यदि एक की कुंडली में 1,4,7,8,12 वें भावों में हो और दूसरे के मंगल इन्हीं भावों में हों तो मंगल दौष नहीं लगता।

क्योंकि शनि डेग्रैतवर ल्कंअ कि कुण्डली में द्वादश भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि मंगल डेग्रैतवर ल्कंअ कि कुण्डली में षष्ठ भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

डतण्ीपी ल्कंअ तथा डेग्रैतवर ल्कंअ में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।